SHEO/KVK/L/456/2025

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर, (बिहार)

प्राकृतिक खेती: रासायनिक खेती का एक प्रबल विकल्प

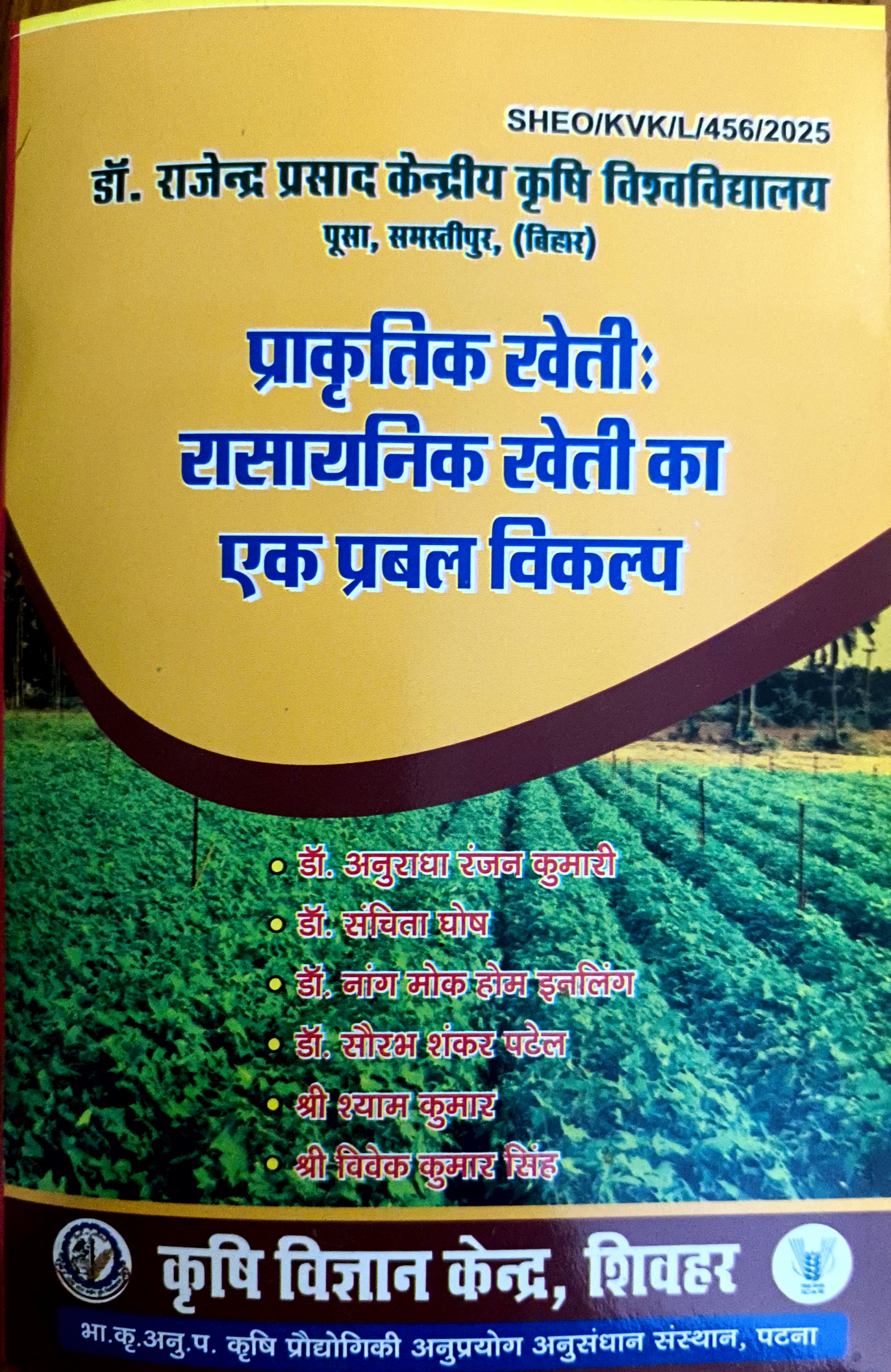

- डॉ. अनुराधा रंजन कुमारी
- डॉ. संचिता घोष
- डॉ. नांग मोक होम इनलिंग
- डॉ. सौरभ शंकर पटेल
- श्री श्याम कुमार
- श्री विवेक कुमार सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवहर
भा.कृ.अनु.प. कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पटना

पेड़ पौधे की वृद्धि और उनसे अच्छा उत्पादन लेने के लिए जिन–जिन संसाधनों की आवश्यकता होती है, उन सभी संसाधनों को प्रकृति द्वारा पौधों को उपलब्ध होना प्राकृतिक कृषि कहलाती है। मुख्य फसल का लागत मूल्य सहयोगी फसलों में से ले लेना और मुख्य फसल बोनस के रूप में प्राप्त करना सही रूप में कम लागत में प्राकृतिक खेती है। रासायनिक खेती से हमारे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण हो रहा है। फसल पर चर्चा बढ़ने के साथ उपज में ठहराव आ गया है। ग्लोबल वार्मिंग और वायुमंडल में संभावित बदलाव चिंता के विषय हो गए हैं। भूमि, पशु, पक्षी, पौधे और मनुष्य का स्वास्थ्य लगातार प्रभावित हो रहा है इसलिए रासायनिक खेती का विकल्प अपनाना आवश्यक हो गया है।

प्राकृतिक खेती में जैविक खेती की तरह जैविक कार्बन खेत की ताकत का इंडीकेटर नहीं है बल्कि केंचुए की मात्रा तथा जीवाणुओं की मात्रा व गुणवत्ता खेती की ताकत का द्योतक है। खेत में जब जैविक पदार्थ विघटित होता है और जीवाणु व केंचुए बढ़ते है तो खेत का जैविक कार्बन स्वतः ही बढ़ जाता है। जीवाणुओं का शरीर प्रोटीन मास होता है जब जीवाणुओं की मृत्यु होती है तो यह प्रोटीन मास जड़ों के पास ह्यूमस के रूप में जमा होकर पौधे का हर प्रकार से पोषण करने में सहायक होता है। दूसरे सहायक जीवाणु जो रासायनिक खाद व दवाओं के कारण भूमि में नहीं पनप पाते हैं। प्राकृतिक खेती से वे जीवाणु भी बढ़ जाते हैं जिसके फलस्वरूप भूमि की कीट, बिमारियों, लवण, सूखा मौसम आदि विषमताओं के प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है जिससे पौधे की और पैदावार भी बढ़ती है।

बीजमृत बनाने की विधि

- 5 किलो देसी गाय का गोबर (ताजा या 3 दिन से अधिक पुराना नहीं) को कपड़े में बाधकर 20 लीटर पानी में 12 घंटे के लिए लटका दें।
- एक लीटर पानी में 50 ग्राम चूना मिलाकर रात भर के लिए रख दें।
- सामाग्री निकालने के लिए गाय के गोबर की इस पोटली को 3 बार पानी में निचोड़ें।
- घोल में 5 लीटर देसी गोमूत्र डालें और चूने का पानी डालकर अच्छी तरह चलाएं।
- बीजामृत बीजोपचार के लिए तैयार है।

जीवामृत बनाने की विधि

- 250 लीटर क्षमता के प्लास्टिक ड्रम में 100 लीटर पानी डालें।

- 5 किलो देशी गाय का गोबर डालें।
- 1 किलो गुड़ डालें।
- 5 लीटर देशी गोमूत्र डालें।
- जंगल या पेड़ के आवरण के नीचे से 75 ग्राम मिट्टी डालें।
- सारी सामाग्री डालने के बाद अच्छी तरह मिला लें। ड्रम को जूट की थैली या सूती कपड़े या प्लास्टिक मच्छरदानी से रोढक कर छाया में रखें।
- लकड़ी के डंडे से मिश्रण को दिन में दो बार (सुबह और शाम) 5–10 मिनट तक चलाएं।
- जीवामृत 9 वें दिन लगाने के लिए तैयार हो जाता है और इसे बनने के 12 वें दिन तक लगाया जा सकता है।
- खुराक जीवामृत 500लीटर/हेक्टेयर सिंचाई महीने में दो बार।

नीमास्त्र

- 5 किलो ताजा नीम के पत्ते या 5 किलो नीम के बीज की गुठली 3–8 महीने पुरानी लें।
- एक प्लास्टिक के ड्रम के कुचले हुए पत्ते/गुठली को 100 लीटर पानी में मिलाएं।
- 5 लीटर देसी गोमूत्र और 1 किलो देशी गाय को गोबर मिलाकर लें।
- सामाग्री को 2–3मिनट के लिए लकड़ी को छड़ी की मदद से अच्छी तरह मिलाए।
- ड्रम के मुंह को एक महीन सूती कपड़े से ढक दें और 48 घंटे के लिए छोड़ दें।
- 48 घंटे के बाद सामाग्री को महीन जाली या कपड़े से छान लें।
- एक हेक्टेयर फसल पर छिड़काव के लिए 5–6 लीटर नीमास्त्र लें और 250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे।

दशपर्णी अर्क की तैयारी

- दस कड़वा पौधों की पत्तियाँ जिसको जानवर न खाता है।
- 10 लीटर देसी गोमूत्र, 1 किलो देसी गाय का गोबर, 500 ग्राम हल्दी पाउडर, 500 ग्राम लहसुन का पेस्ट, 500 ग्राम अदरक का पेस्ट, 1 किलों तम्बाकू के पत्तों का पाउडर 1

किलों गर्म मिर्च का पेस्ट लें।

- 200 लीटर पानी के ड्रम में उपरोक्त सभी सामग्री को पीसकर मिला लें।
- लकड़ी के डण्डा की सहायता से मिश्रण को दिन में तीन बार हिलाएं और 30–40 दिनों के लिए सामग्री को किण्वित करें।
- फिल्ट्रेट कर कंटेनर में स्टोर करें एवं इसे 6 महीने तक इस्तेमाल कर जा सकते है।
- 1 हेक्टेयर फसल पर छिड़काव के लिए 5–6 लीटर अर्क लें और 250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

अग्निस्त्र की तैयारी

- आधा किलो हरी मिर्च, लहसून और 5 किलो ताजा नीम के पत्ते पीस लें
- 20 लीटर देशी गोमूत्र में पिसी हुई सामाग्री डालकर अच्छी तरह मिला लें।
- लगभग 20 मिनट के लिए सामाग्री को लकड़ी की छड़ी से बीच–बीच में हिलाते हुए उबालें ।
- सामाग्री को लगभग 48 घंटों के लिए ठंडा करें
- सामाग्री को महीन सूती कपड़े से छान लें।
- एक हेक्टेयर फसल पर छिड़काव के लिए 5–6 लीटर अग्निस्त्र लें और 250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

ब्रहास्त्र की तैयारी

- 3 किलो ताजा नीम के पत्ते और 2 किलो करंज के पत्ते लें। अगर करंज के पत्ते न हो तो 5 किलो नीम के पत्ते लेकर उन्हें बारीक पीस लें।
- 2 किलो सीताफल के पत्ते और 2 किलो धतूरा के पत्ते लेकर उन्हें बारीक पीस लें।
- उपरोक्त सभी कुचले हुए पत्तों को 10 लीटर देशी गोमूत्र में मिला दे
- मिश्रण को करीब 20–25 मिनट तक उबालें।
- मिश्रण को 48 घंटे के लिए ठंडा कर लें और सामाग्री को महीन सूती कपड़े से छान लें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।
कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवहर

Printed By : NEW PRINT ZONE, Samastipur # 9771222492